Neki KI Dawat Kaise Den ? (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 362
Weekly Booklet : 362

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दावत" की एक क़िस्त

बनाम

नेकी

की दावत कैसे दें ?

सफ़हात 15

नेकी की दावत में नरमी ज़रूरी है 03
ख़ाली थैला 12
शराबी पर इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा 06
बुरी बातों से रोको वरना.....! 14

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा 497 ता 510 से लिया गया है।

नेकी की दा'वत कैसे दें ?

दुआए अ़त्तार : या **रब्बल मुस्त़फ़ा** ! जो कोई 15 सफ़ह़ात का रिसाला : "**नेकी की दा'वत कैसे दें ?**" पढ़ या सुन ले उस को नर्म मिज़ाज और मीठे बोल बोलने वाला बना और उसे वालीदैन समेत बे ह़िसाब बख़्श दे।
اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने मुझ पर सौ 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शोहदा के साथ रखेगा।" (مجمع الزوائد، 10/253، حدیث:17298)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेकी की दा'वत का तारिक हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के त़रीक़े पर नहीं

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا وَيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ या'नी वोह हम में से नहीं जो हमारे **छोटों** पर रह़्म न करे और **बड़ों** की इ़ज़्ज़त न करे और **नेकी का ह़ुक्म** न दे और बुराई से मन्अ़ न करे। (ترمذی، 3/370، حدیث:1928)

नेकी की दा'वत सिर्फ़ उ़लमा पर नहीं अ़वाम पर भी लाज़िम है

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "**नेकी का ह़ुक्म** न दे और बुराई से मन्अ़ न करे" के तह़्त फ़रमाते हैं : हर शख़्स अपनी त़ाक़त और अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ दीनी अह़काम लोगों में जारी करे। येह सिर्फ़ उ़लमा का ही फ़र्ज़ नहीं सब पर लाज़िम है, ह़ाकिम हाथ से बुराइयां रोके, आ़लिम आ़म ज़बानी तब्लीग़ से येह फ़र्ज़ अन्जाम दे। फ़ी ज़माना इस से बहुत ग़फ़्लत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/416)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं तू कर ऐसा जज़्बा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आ'राबी ने जब मस्जिद में पेशाब कर दिया.....

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम नूर के पैकर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में मौजूद थे कि एक आ'राबी (या'नी देहाती) आया और मस्जिद में ख़ड़े हो कर पेशाब करना शुरूअ़ कर दिया। जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने उसे पुकारा : "ठहरो !" आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इसे न रोको छोड़ दो। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ख़ामोश हो गए ह़त्ता कि उस ने पेशाब कर लिया। फिर मुबल्लिगे़ आ'ज़म صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुला कर (नरमी व शफ़्क़त) से फ़रमाया : "येह मसाजिद पेशाब और गन्दगी के लिये नहीं" येह तो सिर्फ़ **अल्लाह** पाक के ज़िक्र, नमाज़ और तिलावते क़ुरआन के लिये हैं। फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी को पानी लाने का ह़ुक्म दिया, वोह पानी

का डोल लाया और उस (या'नी पेशाब की जगह) पर बहा दिया।

(مسلم، ص164، حدیث:285)

नेकी की दा'वत में नरमी ज़रूरी है

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि (**नजिस** या'नी नापाक) ज़मीन अगर्चे सूख कर पाक हो जाती है (जब कि उस से नजासत के असरात ज़ाइल हो जाएं) लेकिन ज़मीन का धोना बहुत ही बेहतर है कि इस से गन्दगी का रंग व बू भी जल्दी जाता रहता है और इस से **तयम्मुम** भी जाइज़ हो जाता है। इस ह़दीस (में पानी का डोल बहाने के तज़्किरे) से येह लाज़िम नहीं आता कि नापाक ज़मीन बिग़ैर धोए पाक नहीं हो सकती नीज़ मस्जिद में पाकी के इ़लावा सफ़ाई भी चाहिये और येह धुलने से ही ह़ासिल होती है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में मुबल्लिग़ीन को त़रीक़ए तब्लीग़ की ता'लीम है कि तब्लीग़ अख़्लाक़ और नरमी से होनी चाहिये। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/ 326)

पेशाब करते करते अचानक रुक जाने के त़िब्बी नुक़्सानात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई पेशाब कर रहा हो उस को चौंका देने वाली आवाज़ लगाने और डराने से बचना चाहिये क्यूं कि पेशाब करते करते किसी ख़ौफ़ वग़ैरा के सबब अधूरा पेशाब फ़ौरन रोक देने से त़िब्बी त़ौर पर इतने सख़्त नुक़्सानात पहुंच सकते हैं जितने सांप के डसने से भी नहीं हो सकते ! पेशाब अधूरा छोड़ देने की वजह से जुनून (या'नी पागल पन और बेहोशी के दौरे पड़ने) और गुर्दों की मोहलिक बीमारियां हो सकती हैं।

खड़े खड़े पेशाब करना सुन्नत नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत में खड़े खड़े पेशाब करने का तज़्किरा है, इस ज़िम्न में अ़र्ज़ है कि खड़े खड़े पेशाब करना

सुन्नत नहीं है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल (1250 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 407 पर है : तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : जो शख़्स तुम से येह कहे कि नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो कर पेशाब करते थे तो तुम उसे सच्चा न जानो, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नहीं पेशाब फ़रमाते मगर बैठ कर। (ترمذی، 1/90، حدیث:12)

खड़े खड़े पेशाब करने के नुक़्सानात

अफ़्सोस ! आज कल खड़े खड़े पेशाब करने का आ़म रवाज हो चुका है बिल ख़ुसूस मत़ार (AIR PORT) और दीगर ख़ास ख़ास मक़ामात पर खड़े हो कर पेशाब करने का मख़्सूस इन्तिज़ाम होता है। इस त़रह़ पेशाब करने से जहां **सुन्नत** फ़ौत होती है वहां इस के त़िब्बी नुक़्सानात भी हैं चुनान्चे त़िब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ खड़े खड़े पेशाब करने से मसाने का ग़ुदूद मुतवर्रिम हो कर (या'नी सूज कर) बढ़ जाता है जिस के बाइ़स पेशाब तक्लीफ़ से आने, धार पतली होने, क़त़रा क़त़रा आने बल्कि पेशाब बन्द हो जाने के अमराज़ पैदा हो सकते हैं। खड़े खड़े पेशाब करने वाले बा'ज़ लोग बिग़ैर धोए या बे ख़ुश्क किये पैन्ट का बटन या ज़िप बन्द कर लेते हैं जिस से उन की रानों वग़ैरा पर पेशाब के छींटे गिरते हैं, इस त़रह़ बिला उ़ज़्र बदन को नापाक करने वाले गुनाहगार होने के साथ साथ त़िब्बन भी नुक़्सान में पड़ सकते हैं एक **मुस्तशरिक़** (या'नी ऐसा फ़िरंगी (युरोपियन फ़र्द) जो मशरिक़ी ज़बानों मसलन उर्दू वग़ैरा का माहिर हो) डॉक्टर जॉन्ट मिलन (Dr. Jaunt Milen) कहता है : सुरीनों (या'नी बदन का वोह ह़िस्सा जो बैठने में ज़मीन पर लगता है वोह) और उस के अत़राफ़ की एलर्जी, रानों की

खुजली और फुड़ियों, **पेड़ू** (या'नी नाफ़ के नीचे के हिस्से) की खाल उधड़ने की बीमारी, पर्दे की मख़्सूस जगह के ज़ख़्म के मरीज़ जब मेरे पास आते हैं तो उन में अक्सर वोही होते हैं जो पेशाब के छींटों से नहीं बचते।

पेशाब के छींटों से न बचने का अ़ज़ाब

ह़ज़रते अबी बकरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चल रहा था और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था। एक आदमी आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाईं त़रफ़ था। दरीं अस्ना हम ने अपने सामने दो क़ब्रें पाईं तो मह़बूबे ख़ुदाए तव्वाब, नुबुव्वत के आफ़्ताब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वजह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे। हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं सब्क़त ले गया और एक टहनी (या'नी शाख़) ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर दिये और दोनों क़ब्रों पर एक एक रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : येह जब तक तर रहेंगे इन पर अ़ज़ाब में कमी रहेगी और इन दोनों को ग़ीबत और पेशाब की वजह से अ़ज़ाब हो रहा है। (مسند امام احمد، 7/304، حدیث:20395)

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ग़ीबतों और पेशाब के छींटों से न बचना क़ब्र के अ़ज़ाब के अस्बाब में से है। आह ! हमारा वोह नाज़ुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दोपहर की धूप की तपिश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाश्त नहीं कर सकता वोह क़ब्र का हौलनाक अ़ज़ाब कैसे सह सकेगा। **या अल्लाह** पाक ! हम पेशाब

की आलूदगियों के जुर्मों, ग़ीबतों, चुग़्लियों और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, प्यारे प्यारे मालिक ! हम से हमेशा हमेशा कि लिये राज़ी हो जा और हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** है जभी तो ब अ़ताए ख़ुदाए वह्हाब क़ब्र का अ़ज़ाब मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया जैसा कि बयान कर्दा ह़दीसे पाक से ज़ाहिर है । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र

मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : सरे अ़र्श : अ़र्श के ऊपर । **मलकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह । **इयां :** ज़ाहिर ।

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अ़र्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र है । दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर न हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शराबी पर इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "नरमी" से जो काम होता है वोह "गरमी" से नहीं हुवा करता और मुबल्लिग़ को तो "मोम" से ज़ियादा नर्म और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा रहना चाहिये, डांट डपट और झाड़ झपट करने से किसी की इस्लाह़ होनी मुश्किल है । ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद

बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "एह़याउल उ़लूम" में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ज़करिय्या رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन आ़इशा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुवा, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नमाज़े मग़रिब के बा'द मस्जिद से घर की जानिब रवाना हुए, रास्ते में एक क़ुरैशी नौ जवान नशे में धुत नज़र आया, उस ने एक औ़रत को पकड़ लिया, औ़रत चिल्लाई, लोग लपके और उस नौ जवान पर टूट पड़े, ह़ज़रते इब्ने आ़इशा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उसे पहचाना और लोगों से छुड़ा कर शफ़्क़त के साथ सीने से लगा लिया, अपने घर लाए और उसे सुला दिया। जब वोह जागा तो उस का नशा उतर चुका था। उसे नशे के दौरान होने वाले बे ह़याई के क़िस्से और पिटाई का मा'लूम हुवा तो मारे शर्म के रो पड़ा और जाने लगा। ह़ज़रते इब्ने आ़इशा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस को रोका और निहायत नरमी के साथ नेकी की दा'वत दी और एह़सास दिलाया कि बेटा ! आप तो क़ुरैशी हैं ! आप की ख़ानदानी शराफ़त मरह़बा ! येह तो ग़ौर फ़रमाइये कि आप किस अ़ज़ीम हस्ती की औलाद हैं ! बेटा ! **अल्लाह** पाक से डरिये और हमेशा के लिये शराब नोशी और दीगर गुनाहों से तौबा कर लीजिये। वोह नौ जवान इस प्यार भरी नेकी की दा'वत से पानी पानी हो गया और उस ने रो रो कर तौबा की। शराब और दीगर गुनाहों के क़रीब न जाने का अ़ह्द किया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने शफ़्क़त से उस का माथा चूमा और ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। वोह बेह़द मुतअस्सिर हुवा और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सोह़बत में रहने लगा और अह़ादीसे मुबारका लिखने पर मामूर हुवा। (احیاءالعلوم،2/411ماخوذاً)

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
*डूब सकती ही नहीं मौजों की तुग़्यानी में जिस की कश्ती हो **मुह़म्मद** की निगह़्बानी में*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मैं ने उसे क़त्ल कर के ख़ुदकुशी कर लेनी थी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से पीछा छुड़ाने, नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेहन बनाने, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें अपनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने, जन्नतुल फ़िरदौस में जगह पाने और अ़ज़ाबे नार से ख़ुद को बचाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। सुन्नतों भरे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये और नेक आ'माल के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये। आप की तरग़ीब व तह्रीस के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है। एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान एक मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ से क़ब्ल सुन्नतों भरा बयान करने की सआ़दत ह़ासिल हुई, बयान के इख़्तिताम पर मस्जिद में मौजूद इस्लामी भाइयों को उन की पेश आमदा परेशानियों के लिये रूह़ानी इ़लाज ह़ासिल करने की तरग़ीब दी। एक साह़िब नमाज़े अ़स्र के वक़्त उन के पास तशरीफ़ लाए और अपना मस्अला कुछ इन अल्फ़ाज़ में बयान किया : उन्हें अ़र्से क़ब्ल मैं रोज़गार के सिल्सिले में अपने मुल्क से बाहर गए तो वहां जा कर चोरी, डाका ज़नी जैसे जराइम और दूसरे ग़ैर क़ानूनी कामों में मुलव्वस हो गए जब कि अपने मुल्क में मेरी ग़ैर मौजूदगी में घर पर येह क़ियामत टूटी कि किसी ने मेरे बच्चों की अम्मी पर ग़लत़ व बे बुन्याद इल्ज़ामात आ़इद कर दिये जिस का नतीजा उस की ख़ुदकुशी की सूरत में ज़ाहिर हुवा। जब उन्हें इस सानिह़े की ख़बर दी गई तो वोह सदमे से पागल हो गए और फ़ौरी त़ौर पर अपने गांव आ पहुंचा। नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर उन्हों ने अपनी अहलिया पर ग़लत़ तोहमत लगाने वाले को क़त्ल कर के ख़ुद भी ख़ुदकुशी कर लेने का इरादा कर लिया। उन्हों ने इस वारिदात के लवाज़िमात

भी मुकम्मल कर लिये थे लेकिन इस मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ अदा करने के साथ साथ आप का बयान सुनने की सआ़दत भी नसीब हुई, बयान के इख़्तिताम पर आप ने मुश्किलात के ह़ल के लिये ''शो'बा रूह़ानी इ़लाज'' से राबित़ा करने की जो तरग़ीब दी उस से ढारस बंधी। बयान सुन कर मेरे उन के गुनाहों भरे इरादे मुतज़ल्ज़ल हो गए और उन्हों ने येह फ़ैसला किया है कि आप से अपना मस्अला बयान कर के कोई ऐसी सूरत इख़्तियार की जाए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। उस की बातें सुन कर पहले तो वोह घबराए लेकिन फिर **अल्लाह** पाक **व रसूल** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद कर के मौक़अ़ की मुनासबत से मुआ़मले को ह़ल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के सुन्नतों भरे तह़रीरी बयानात के तीन रसाइल ''गुस्से का इ़लाज, अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत और ख़ुदकुशी का इ़लाज'' से रहनुमाई लेते हुए तक़रीबन एक घन्टे तक उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه आख़िरे कार वोह इस्लामी भाई अपने ख़त़रनाक इरादे से बाज़ आ गए और यूं दो क़ीमती जानें ज़ाएअ़ होने से मह़फ़ूज़ हो गईं उन्हों ने अश्कबार आंखों से तौबा की और मअ़ ना बालिग़ बच्चों के ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के मुरीद हो गए, घर की ह़िफ़ाज़त और कारोबार में बरकत के लिये ''ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या'' भी ह़ासिल किये। जब मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी उन्हें मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की रग़बत दिलाई तो पुरनम आंखों के साथ भर्राई हुई आवाज़ में कहा : ''اِنْ شَآءَاللّٰه अब तो मेरी तमाम ज़िन्दगी दा'वते इस्लामी के दीनी कामों ही में गुज़रेगी।''

ऐ इस्लामी भाई न करना लड़ाई कि हो जाएगा बदनुमा दीनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه तुम अपनाए रख्खो सदा दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुबल्लिग़ीन जुमुआ़ को बयान किया करें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार से जुमुआ़ के सुन्नतों भरे बयान की बरकतें मा'लूम हुईं, दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदारान को चाहिये कि जहां जहां मुम्किन हो जुमुआ़ में बदल बदल कर मुबल्लिग़ीन के सुन्नतों भरे बयानात की तरकीब फ़रमाया करें क्यूं कि नमाज़े जुमुआ़ में आने वाले कई अफ़राद ऐसे होते हैं जो उ़मूमन किसी भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत नहीं करते, इस त़रह़ ऐसों तक भी दा'वते इस्लामी का दीनी पैग़ाम पहुंच जाएगा और कई ख़ुश नसीबों का दिल चोट खा जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه वोह गुनाहों से ताइब हो कर पांच वक़्त के नमाज़ी बन जाएंगे और उन पर आप की मज़ीद इन्फ़िरादी कोशिश اِنْ شَآءَاللّٰه उन्हें मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना कर दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता कर के सुन्नतों के सांचे में ढाल देगी। जैसा कि अभी आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि मुआ़शरे का बिगड़ा हुवा ज़िन्दगी से बेज़ार शख़्स मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयान और इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से क़त्ले मुस्लिम से बाज़ रह कर और ख़ुदकुशी का इरादा तर्क कर के ताइब हो गया।

हर दो मिनट में तीन ख़ुद कुशियां

अफ़्सोस ! आज कल "ख़ुदकुशी" कुछ ज़ियादा ही आ़म हो गई है, इस का एक बहुत बड़ा सबब इ़ल्मे दीन से दूरी है, दाढ़ी मुन्डों, या जज़्बाती मॉडर्न बे रीश लड़कों, स्कूल व कॉलेज के त़ालिबे इ़ल्मों, दुन्यवी ता'लीम याफ़्तों या बे पर्दा व फ़ैशन एबल औ़रतों में ही ख़ुदकुशी का मैलान देखा जा रहा है। आप ने कभी नहीं सुना होगा कि फ़ुलां दीनी त़ालिबे इ़ल्म या आ़लिमे दीन या मुफ़्ती साह़िब या शरीअ़त की पाबन्द पर्दा नशीन नेक

बीबी ने ख़ुदकुशी कर ली। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 472 सफ़ह़ात की किताब, ''बयानाते अ़त्तारिया (ह़िस्सए दुवुम)'' सफ़ह़ा 404 ता 406 पर है : गुनाहों की कसरत और अह़वाले आख़िरत के मुआ़मले में जहालत के सबब अफ़्सोस ! हमारे वत़ने अ़ज़ीज़ में ख़ुदकुशी का रूज्ह़ान बढ़ता ही चला जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ दुन्या में हर 40 सेकन्ड में ख़ुदकुशी की एक वारदात होती है !

क्या ख़ुदकुशी से जान छूट जाती है ?

ख़ुदकुशी करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! ह़ालां कि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त की सूरत में निहायत बुरी त़रह़ फंस जाती है। ख़ुदा की क़सम ! **ख़ुदकुशी** का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

आग में अ़ज़ाब

ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स जिस चीज़ के साथ ख़ुदकुशी करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा।

(بخاری، 4/289، حدیث:6652)

उसी हथयार से अ़ज़ाब

ह़ज़रते साबित बिन ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से **ख़ुदकुशी** की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से अ़ज़ाब दिया जाएगा।

(بخاری، 1/459، حدیث:1363)

गला घोंटने का अ़ज़ाब

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, सरकारे दो आ़लम

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की आग **में अपना गला घोंटता रहेगा** और जिस ने ख़ुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में ख़ुद को नेज़ा मारता रहेगा।

(بخاری، 1/460، حدیث:1365)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ाली थैला

मुसल्मानो के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जो दिल अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई तस्लीम न करे तो उस के ऊपर वाले हिस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थैले को उल्टा किया जाता है और फिर थैले के अन्दर की चीज़ें बिखर जाती हैं। (مصنف ابن ابی شیبہ، 8/667، رقم:124)

दिल के "अन्धे" और "औंधे" होने के मा'ना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई इस में बरबादी ही बरबादी है कि आदमी का दिल अच्छाई को अच्छाई और बुराई को बुराई मानने ही से इन्कार कर दे। हमें गुनाहों से हमेशा बचना और **अल्लाह** पाक से क़ल्बे सलीम (या'नी सह़ीह़ व सलामत दिल) त़लब करना चाहिये, वरना अभी आप ने दिल की तबाही के **मुतअ़ल्लिक़** मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का इर्शाद मुलाह़ज़ा फ़रमाया। याद रखिये ! गुनाहों की कसरत के सबब पहले दिल "अन्धा" होता और फिर "औंधा" या'नी उल्टा हो जाता है जो कि आख़िरत के लिये इन्तिहाई तबाह कुन है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" (561 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 405 पर है : तीन चीज़ें अ़लाह़दा अ़लाह़दा हैं, नफ़्स, रूह़, क़ल्ब

(या'नी दिल)। रूह़ ब मन्ज़िलए बादशाह के है और नफ़्स व क़ल्ब इस के दो वज़ीर हैं। नफ़्स इस को हमेशा शर की त़रफ़ ले जाता है और क़ल्ब जब तक साफ़ है ख़ैर की त़रफ़ बुलाता है और مَعَاذَاللہ कस्रते मआ़सी (या'नी गुनाहों की ज़ियादती) और ख़ुसूसन कस्रते बिदआ़त से "अन्धा" कर दिया जाता है। अब उस में ह़क़ के देखने, समझने ग़ौर करने की क़ाबिलिय्यत नहीं रहती मगर अभी ह़क़ सुनने की इस्ति'दाद (या'नी क़ाबिलिय्यत) बाक़ी रहती है और फिर مَعَاذَاللہ "औंधा" कर दिया जाता है। अब वोह न ह़क़ सुन सकता है और न देख सकता है, बिल्कुल चौपट (या'नी वीरान) हो कर रह जाता है। (फिर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया :) **क़ल्ब** (या'नी दिल) ह़क़ीक़तन उस **मुज़्ग़ए** गोश्त (या'नी गोश्त के लोथड़े) का नाम नहीं बल्कि वोह एक "**लत़ीफ़ए ग़ैबिय्या**" है जिस का मर्कज़ येह **मुज़्ग़ए** गोश्त (या'नी दिल) है सीने के बाईं (या'नी उल्टी) जानिब और नफ़्स का मर्कज़ ज़ेरे नाफ़ (या'नी नाफ़ के नीचे) है इसी वासित़े शाफ़ेइय्या (या'नी शाफ़ेई ह़ज़रात) सीने पर हाथ बांधते हैं कि "नफ़्स" से जो वसाविस उठें वोह "क़ल्ब" तक न पहुंचने पाएं और **ह़नफ़िय्या** (या'नी ह़नफ़ी ह़ज़रात) ज़ेरे नाफ़ बांधते हैं।

तौफ़ीक़ नेकियों की ऐ रब्बे करीम दे बदियों से बचने वाला तू क़ल्बे सलीम दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी ?

ह़ज़रते अबुद्दर्दाअ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि तुम नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना वरना तुम पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत़

कर दिया जाएगा जो तुम्हारे छोटे पर रह़्म नहीं करेगा और तुम्हारे नेक लोग दुआ़ करेंगे मगर उन की दुआ़एं क़बूल नहीं होंगी, वोह मुआ़फ़ी मांगेंगे मगर उन को मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी। (احیاء العلوم، 2/383)

बुरी बातों से रोको वरना.....!

मुसल्मानों के पहले ख़लीफा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम इस आयत को पढ़ते हो :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ

(پ7، المائدۃ:105)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

(या'नी तुम इस आयत से येह समझते होगे कि जब हम ख़ुद हिदायत पर हैं तो गुमराह की गुमराही हमारे लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) नहीं, हम को किसी गुमराह को गुमराही से मन्अ़ करने की ज़रूरत नहीं) मैं ने मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि लोग अगर बुरी बात देखें और उस को न बदलें तो क़रीब है कि **अल्लाह** पाक उन सब को अपने अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे। (ابن ماجہ، 4/359، حدیث:4005)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त "मिरआतुल मनाजीह़" में है : क़ुरआने करीम की इस आयत :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ

(پ7، المائدۃ:105)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

के ह़वाले से बा'ज़ लोग समझते थे कि اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने) की ज़रूरत नहीं बल्कि आदमी को अपनी इस्लाह़ करनी चाहिये दूसरों के गुनाह या कोताहियां इस का कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इस मुग़ालते़ को दूर करते हुए रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इस इर्शादे गिरामी के ह़वाले से बताया कि जब लोग बुराई को देख कर उसे बदलने की कोशिश न करें तो वोह सब अ़ज़ाब में मुब्तला होते हैं। दूसरी रिवायात से येह बात वाज़ेह़ होती है कि इस तब्दीली का तअ़ल्लुक़ ता़क़त से है या'नी बुराई को बदलने वाले लोग इस बात की ता़क़त रखने के बा वुजूद न बदलें तो वोह भी अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ होंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/507)

मज़्कूरा आयते मुक़द्दसा के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुसल्मान कुफ़्फ़ार की मह़रूमी पर अफ़्सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़्फ़ार इ़नाद (या'नी अ़दावत) में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से मह़रूम रहे। **अल्लाह** पाक ने उन (मुसल्मानों) की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़रर (या'नी नुक़्सान) नहीं اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी भलाई का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) का फ़र्ज़ अदा कर के तुम बरिय्युज़्ज़िम्मा हो चुके तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) ने फ़रमाया : इस आयत में اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر के वुजूब की बहुत ताकीद की है क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह हैं कि एक दूसरे की ख़बरगीरी करे, नेकियों की रग़बत दिलाए, बदियों से रोके।

अगले हफ़्ते का रिसाला